



श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ४

सितंबर नुमाई - २०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रह दिया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोड़ना नहीं है, जोड़ने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरूरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नहीं जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इंटरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरूरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो -

२०

- गुरु भगवंत जो..... दे वो स्वीकार कर श्रद्धापूर्वक पूर्ण करने का है।
- तेजोलेश्या अथवा शीतलेश्या का प्रयोग करते समय..... लब्धिवाला जीव अपने आत्मप्रदेशो को शरीर के बाहर निकलाता है।
- सूत्र जिनबिंब की प्रतिष्ठा, रथयात्रा तथा स्नात्र के अंत में बोला जाता है।
- इसी तरह..... तीर्थ के सेवन से क्रोधरुप गरमी शांत होती है।
- सब जीवो को वेदना..... और मरण समुद्धात हो सकते हैं।
- उपर..... भगवंत स्वाध्याय कर रहे थे।
- एक जिनशासन का सार एवं अर्करूप ग्रंथ है।
- केवली समुद्धात से नाम, गोत्र, वेदनीय कर्म का करणद्वारा बहुत विनाश होता है।
- पांच प्रकार के आचार को जानते हो वो..... कहलाते हैं।
- दिगंबर परम्परा श्रीउमास्वातिजी को..... समान मानती है।
- लोगो को दिखाने के लिये छोटे दोषो की आलोचना ले पर बड़े दोषो की आलोचना नहीं ले वो..... है।
- निश्चय और व्यवहारयुक्त है।
- कर्मक्षय की क्रिया में यह..... की क्रिया सहायक बनती है।
- विद्यापीठ में से निकलकर..... गुरु के नगर की ओर भाग निकले।
- आज का दिन पवित्र है, यह अवसर..... है।
- में से चिंतन को दूर कर मन में संपूर्ण विद्यारूपी अमृत को भरता है।
- समुद्धात में जीव मोहनीय कर्म के बहुत सारे कर्मपुद्गलो की उदीरणा करता है।
- राजमान्य पुरोहित होने से अहंकारी थे।
- विश्व का एक भी विषय ऐसा नहीं है जिसकी..... में स्पर्शना न हुई हो।
- मेल के दूर होने से आत्मा की शुद्धि होती है।

१५

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

- अनेक पापो से आत्मा को मुक्त करने के लिये क्या करना चाहिये ?
- सात समुद्धात की क्रिया कौन कर सकता है ?
- जन्माभिषेक करने के पश्चात शांति की उद्घोषणा कौन करता है ?
- तत्त्वार्थसूत्र के आठवें अध्याय में किसका निरूपण किया है ?
- योगसूत्र के रचयिता कौन हैं ?
- जहां लोभ का सूक्ष्म अंश है, वो कौनसा गुणस्थान कहलाता है ?
- आलोचना का मार्ग स्वीकार कर अनेक आत्माओ ने क्या प्राप्त किया है ?
- कौनसे धर्मध्यान में आंशिक रूप से शुक्ल ध्यान है ?
- जब अघाती कर्मों की स्थिति समान नहीं हो तब जीव उसे समान करने कौनसा समुद्धात करता है ?
- परमहंस की रक्षा किसने की ?
- तत्त्वार्थसूत्र की सबसे बड़ी टीका किसकी है ?
- त्रिलोक में उद्योत करनेवाले कौन हैं ?
- दंडक प्रकरण कौनसे मुनि ने लिखा है ?
- कषाय क्या सेवन करने से बढ़ते हैं ?
- संसार से हारे और थके हुआ का विश्रामस्थल कौन है ?

१०

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

- १) वः २) समेत्य ३) समुग्धाया ४) त्यागा ५) हीन ६) गोयम ७) माहरवं ८) वेय ९) अहन् १०) विज्ञाय ११) निज्जरेइ १२) विधाय १३) महिताः १४) सन्नीणं १५) यावत् १६) सत् १७) निगम्यतां १८) नामान १९) पक्कवीय २०) अनमाण

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) -

१०

A	B	A	B
१) वैयावच्च	२) मूल	६) शुक्लध्यान	६) आरंभिक
२) चौदह पूर्वधर	२) रूपाति धर्मध्यान	७) सदध्यान	७) आकंप
३) विद्यागुरु	३) वृद्धशांति	८) दीक्षागुरु	८) आयुष्यकर्म
४) जंबूलता	४) घोषनंदि	९) नंदिषेण	९) आहारक समुद्घात
५) मरण समुद्घात	५) अजित शांति स्तव	१०) शांतिसूरि	१०) श्रीहरिदेव

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो -

१०

१. श्रीजिनभट्टजी ने कितने शिष्यों को पू. हरिभद्र के कषाय को उपशांत करने भेजा ।
२. धर्मध्यान की भावना कितनी है ?
३. कितने प्रकार के गुणों के धारक आचार्य के पास आलोचना लेनी चाहिये ?
४. सरस्वती देवी कितने स्वरूपवाली होती है ।
५. कर्मतत्त्व का निरूपण करने वाले अध्याय में कितने सूत्र हैं ?
६. अत्यन्त विशाल विद्यापीठ में कितने अध्यापक थे ?
७. आलोचनाचार्य कितने प्रकार के ज्ञान वगैरह आचार वाले होते हैं ?
८. सूक्ष्मसंपराय गुणस्थान पर मोहनीयकर्म की कितनी प्रकृति शांत अथवा क्षीण होती है ?
९. गर्भज तिर्यच को कितने समुद्घात होते हैं ?
१०. षडदर्शन समुच्चय में कितने दर्शन की विशेष समझ दी गयी है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ -

१०

१. योगसूत्र की रचना श्रीहरिभद्रसूरि ने की है ।
२. छेदग्रंथों के रहस्यों से अंजान गुरु के पास से आलोचना ले तो वो अव्यक्त दोष है ।
३. विश्व का स्वरूप समझा हुआ खगोलशास्त्र है ।
४. पवन आसन इन्द्रिय, मन, क्षुधा, निद्रा को जीतता है ।
५. सारे जीवों को वेदना, कषाय, मरण और वैक्रिय समुद्घात हो सकता है ।
६. श्रीहरिभद्र जाति से ब्राह्मण और कर्म से पुरोहित थे ।
७. चौथे समय में १४ अवकाश पूरा कर संपूर्ण ४ राजलोक में आत्मप्रदेशों को विस्तारित करता है ।
८. पांच प्रकार के आचार को जानता हो वो आचारवान कहलाता है ।
९. साध्वीजी श्रावक को शिष्य बनाते हैं ।
१०. कषाय समुद्घात में नये कर्म बंधते हैं ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -

१०

१. सात समुद्घात की क्रिया केवल संज्ञी मनुष्य ही कर सकते हैं ।
२. वे जिनेश्वरों जय पाओ, सानिध्य करने वाले हो ।
३. निश्चय और व्यवहार दोनों को जीवन में स्थान देना चाहिये ।
४. जीवन में ऐसे दोषों का सेवन न हो इसके लिये सावधान बनने का है ।
५. केवली समुद्घात केवली भगवंतों को चार अघाती कर्मों की स्थिति समान नहीं होती तब होता है ।
६. उनके ज्ञान और विद्वता की प्रशंसा करने में आयी है ।
७. पाप (दोष) दूर होने से प्रमोद उत्पन्न होता है ।
८. संपराय यानि कषाय, जहां सूक्ष्म कषाय है वो सूक्ष्म संपराय ।
९. रे मोह ! तेरी गति न्यारी है..... ।
१०. एक बार इस संक्षिप्त नोट के पन्ने उडकर अन्य भिक्षु के हाथ में आये ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -

१५

१. तीर्थंकरों का जन्म महोत्सव, वृहद्शांति के आधार पर समझाइये । २) आलोचना के कोई भी तीन दोष समझाइये ।
३. अप्रमत्त गुणस्थान समझाइये । ४) तैजस समुद्घात के बारे में बताइये ।
५. उमास्वातिजी के तत्त्वार्थसूत्र का परिचय कराइये ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com